रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

महान समाज सुधारक थे वीर सावरकर–कुलपति प्रो. मिश्र

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वीर सावरकर जयंती पर ऑनलाईन व्याख्यानमाला कार्यक्रम का आयोजन

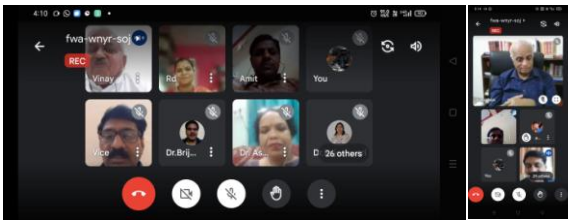

जबलपुर 28 मई। वीर सावरकर साहस, देशभक्ति और असीम प्रतिबद्धता का प्रतीक हैं। वे एक महान समाज सुधारक भी थे। उनका दृढ़ विश्वास था, कि सामाजिक एवं सार्वजनिक सुधार बराबरी का महत्त्व रखते हैं व एक दूसरे के पूरक हैं। उक्त विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने शनिवार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वीर सावरकर जयंती पर आयोजित व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल की प्रेरणा और मान. श्री धर्मेंद्र प्रधान जी शिक्षा मंत्री भारत सरकार के निर्देशन में लोक प्रबोधनी एवं रादुविवि के संयुक्त तत्वावधान में स्वातन्त्र्य समर "भारत बोध" विषय पर आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम में स्वागत उद्‌बोधन कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने प्रस्तुत किया।

राष्ट्र की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण है स्वदेशी आंदोलन–

मुख्य वक्ता मान. श्री कश्मीरी लाल जी भाई साहब अखिल भारतीय संगठक स्वदेशी जागरण मंच केन्द्र, नई दिल्ली ने बताया कि स्वदेशी आंदोलन का देश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान था। ब्रिटिश सरकार के द्वारा लाये जाने वाली माल का बहिष्कार करके भारत में निर्मित सामान का अधिक से अधिक उपयोग किया जाने से है ये आंदोलन को बंगाल से पुरे भारत में फैलाने में कई नेताओं ने सहयोग किया इस आंदोलन का एक ही उद्देश्य था स्वदेश (अपने देश में खुद का काम करे और ब्रिटिश की सम्राज्यवादी को आर्थिक हानि हो)। इस दौरान महत्वपूर्ण घटना जैसे बंगाल विभाजन हुए। इस आंदोलन में अरबिंद घोष, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, वीर सावरकर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय स्वदेशी आंदोलन के मुख्य उद्‌घोषक थे। कालांतर में यही स्वदेशी आंदोलन गांधीजी के स्वतंत्रता आंदोलन का भी केन्द्र बिंदु बना।

व्याख्यानमाला में मान. प्रो. बी. के. कुठियालाजी, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद, हरियाणा सरकार ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में जो स्व का बोध है वह सबसे महत्वपूर्ण है। स्वाधीनता, स्वतंत्रता और स्वराज भारतीय जनमानस के लिए आवश्यक पहलू हैं। वीर सावरकर ने इसके लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

जीवन दर्शन की जानकारी–

व्याख्यानमाला कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए विवि की आजादी का अमृत महोत्सव समिति संयोजक डॉ. देवीलता रावत ने बताया कि विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को हुआ था। वे भारत के महान क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, समाजसुधारक, इतिहासकार, राष्ट्रवादी नेता तथा विचारक थे। उन्हें प्रायः स्वातन्त्र्यवीर और वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। अतिथि परिचय डॉ. आशारानी एवं डॉ. मीनल दुबे ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लोक प्रबोधनी संस्था के डॉ. ब्रजेन्द्र शुक्ला, श्री अमित मिश्रा सहित रादुविवि के सभी प्राध्यापक, अतिथि विद्वान एवं प्रतिभागियों की ऑनलाईन उपस्थिति रही। संचालन एवं आभार प्रदर्शन संयोजक डॉ. देवीलता रावत ने किया।